Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-196-198

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 196-198
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. प्रवीणा प्रीति

विश्वविद्यालय गृह विज्ञान विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

Corresponding Author :

डॉ. प्रवीणा प्रीति

विश्वविद्यालय गृह विज्ञान विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

पारिवारिक व्यय एवं घरेलू हिसाब : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सारांश : पारिवारिक व्यय एवं घरेलू हिसाब किसी भी समाज की आर्थिक एवं सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण आधार है। परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई होने के कारण उसकी आर्थिक स्थिति का प्रभाव व्यापक सामाजिक विकास पर पड़ता है। वर्तमान समय में बढ़ती महँगाई, बदलती जीवन–शैली, उपभोक्तावाद तथा तकनीकी विकास ने पारिवारिक आय–व्यय के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। ऐसे में घरेलू हिसाब रखना केवल खर्चों का लेखा–जोखा भर नहीं रह गया है, बल्कि यह आर्थिक प्रबंधन, बचत, निवेश और भविष्य की सुरक्षा का आवश्यक साधन बन गया है।

प्रस्तुत शोध आलेख में पारिवारिक व्यय की अवधारणा, उसके प्रकार, घरेलू हिसाब रखने की पद्धतियाँ, बजट निर्माण, बचत का महत्व तथा आधुनिक संदर्भ में डिजिटल वित्तीय प्रबंधन का विस्तृत अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उचित घरेलू लेखांकन आर्थिक संतुलन बनाए रखने, ऋण से बचने तथा भविष्य की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने में अत्यंत सहायक है।

मुख्य शब्द : पारिवारिक व्यय, घरेलू हिसाब, बजट, बचत, आय–व्यय प्रबंधन, आर्थिक स्थिरता

परिवार को विभिन्न साधनों से आय प्राप्त होती है तथा वह उस आय का किस प्रकार, कहाँ व्यय करता है, पारिवारिक व्यय कहलाता है। पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय किया जाता है। परिवार की आय में से जो व्यय योग्य आय रह जाती है, उसका व्यय किया जाता है।[1] पारिवारिक व्यय की मुख्य रूप से निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है –

उपभोग व्यय : आय का वह भाग जो उपभोग के लिए एवं आवश्यक सामग्री प्राप्त करने के लिए व्यय किया जाए, वह उपभोग व्यय कहलाता है। यह प्रत्येक परिवार में लगभग समान होता है। प्रति माह परिवार को एक निश्चित राशि घर, भोजन, वस्त्र बीमा आदि पर अनिवार्य रूप से खर्च करनी पड़ती है। इसमें व्यय की धनराशि में परिवर्तन आ सकता है, परंतु मदों में कोई परिवर्तन नहीं होता है।[2]

बचत : उपभोग के बाद जो धनराशि शेष रह जाती है उसकी बचत की जाती है। अर्थात् बचे हुए धन को

उत्पादक रूप में विनियोग करना।

उपभोग व्यय के रूप :

निश्चित व्यय : वे होते हैं जो एक निश्चित अवधि के पश्चात दोहराने पडते हैं जैसे प्रति माह राशन, बिल, बीमा आदि जमा कराना। इस व्यय की मदें एक समान होती हैं। धनराशि प्रत्येक परिवार की भिन्न हो सकती है।

अर्ध–निश्चित : इस प्रकार के व्यय–आय एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। इस व्यय के अंतर्गत आराम और विलास की वस्तुएँ आती हैं। विशेष पर्व, त्यौहार, जन्म दिवस आदि पर व्यय आता है।

अन्य व्यय : कुछ व्यय ऐसे होते हैं जो व्यक्ति की आय पर निर्भर करते हैं। परिवार अपने आर्थिक साधनों के अनुसार व्यय करते हैं। जैसे मनोरंजन, आभूषण, वस्त्र आदि पर व्यय। आय कम होने पर सादा वस्त्रों से काम चलता है और अधिक होने पर व्यय अधिक किया जाता है।

पारिवारिक व्यय का महत्व : आज के श्रम विभाग और विशिष्टीकरण के युग में परिवार अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग कर संतोष प्राप्त करते हैं। इसके लिए व्यक्ति एवं परिवार के अन्य सदस्य अपनी अपनी योग्यता और शिक्षा के अनुसार आय अर्जित करते हैं और अपनी मन पसन्द वस्तुएँ खरीदते हैं।[3]

आवश्यकताएँ अनेक और अनन्त होती हैं, जिसके लिए परिवार उपभोग व्यय करता है। उपभोग की वस्तुओं की मांग में वृद्धि होने पर उत्पादन की गति और मात्रा भी बढती है। उत्पादित वस्तुओं के विनिमय से व्यक्ति अपनी इच्छित वस्तुएँ प्राप्त कर उपभोग कर सकता है। उत्पादित माल के वितरण से मनुष्य अपनी आय प्राप्त करता है तथा आय का विनिमय कर ही वह आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त कर उपभोग कर सकता है।[4]

पारिवारिक व्यय का व्यापारिक महत्व : 'उपभोक्ता सम्राट है' अर्थात् व्यय ही उत्पादन, विनिमय एवं वितरण का मार्गदर्शन करता है। उपभोक्ता जिस वस्तु को पाने एवं उपभोग करने की इच्छा रखता है, उसी की माँग करता है। फैशन, रूचि, नवीन वस्तुओं के अनुसार उपभोक्ता की माँग में परिवर्तन आता रहता है। उत्पादक उपभोक्ता की माँग पर किसी वस्तु का उत्पादन करता है तथा परिवर्तन आने पर वह भी उत्पादन में नवीनीकरण करने के लिए बाध्य हो जाता है। वस्तु की गुणात्मकता ऐसी होनी चाहिये जिसे ग्राहक पसंद करें और वितरण माँग के अनुरूप ही होना चाहिये।[5]

व्यय का सामाजिक महत्व : व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी होने की वजह से उसके प्रत्येक कार्य का प्रभाव परिवार के अन्य सदस्यों एवं समाज पर पडता है। यदि परिवार अपनी आय को बुद्धिमता एवं विवेकपूर्ण ढ़ंग से स्वास्थ्यप्रद भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा आदि पर व्यय करता है तो उस व्यक्ति की कार्य–क्षमता एवं उत्पादन शक्ति में वृद्धि होती है। इसी तरह से समाज के सभी परिवार इसी विवेकपूर्ण तरीके से अपनी आय को व्यय करते हैं तो पूरे देश में धनोत्पत्ति में वृद्धि होगी और समाज सुखी एवं समृद्ध होगा।[6]

देश में वही वस्तुएँ उत्पादित की जाती हैं, जिनकी माँग होती है। उपभोक्ता का कर्त्तव्य है कि वह अपनी व्यय प्रक्रिया इस प्रकार से संचालित करें कि समाज का हित हो। यदि समाज में धूमपान और शराबखोरी का आम चलन है अन्य लोग भी अनुकरण करने की प्रवृत्ति होने के कारण, वैसा ही व्यवहार करेंगे। उत्पादक भी उपरोक्त उत्पादन में लग जायेंगे और स्वास्थ्यवर्धक उत्पादन कम हो जायेगा। इसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण समाज को हानि होगी और समाज की कार्य–क्षमता भी कम हो जायेगी। एक व्यक्ति के उपभोग दूसरों की उपभोग की शक्ति पर प्रभाव डालता है। यदि एक व्यक्ति विलासिता की वस्तु की अत्यधिक माँग करता हो तो उत्पत्ति के साधन प्रमुख आवश्यकता की वस्तुओं के स्थान पर विलासिता की वस्तु का उत्पादन अधिक करेंगे।

घरेलू हिसाब–किताब : पारिवारिक आय की सीमितता को ध्यान में रखकर, सभी सदस्यों की आवश्यकताओं को संतुष्ट करना आवश्यक है। आय का हिसाब–किताब रखकर, गृहस्थी को सुचारू रूप से चलाने की व्यवस्था करनी पडती है। गृहिणी के पास लिखित रूप में लेखा रखने से यह ज्ञात हो जाता है कि खर्च बजट के अनुसार हो रहा है अथवा नहीं। आय–व्यय का संतुलन बनाना सरल रहता है साथ ही अनावश्यक व्यय पर नियंत्रण रहता है। यदि खर्च में वृद्धि हो जाये तो उसे हिसाब रखकर कम किया जा सकता है। इस प्रकार महिने के अन्त में बजट के अनुसार बचत भी संभव हो जाती है। हिसाब की आदत डालना उचित व

भविष्य के लिए लाभदायक रहता है।[7]

हिसाब–किताब के प्रकार :

बाजार खर्च : बाजार का हिसाब रखना गृहिणी के लिए बहुत आवश्यक है क्योंकि आय का मुख्य भाग बाजार से घरेलू वस्तुएँ, खाद्य सामग्री, फल–सब्जी, कपडा आदि लाने में व्यय होता है। इन वस्तुओं पर होने वाले व्यय को प्रतिदिन लिखना चाहिए। बाजार खर्च की डायरी रखनी चाहिए, जिसमें रोज शाम को हिसाब लिखना चाहिए।

दूध का हिसाब : दूध का हिसाब महिना अंत होने पर किया जाता है, जब दूध का ब्यौरा विस्तार से लिखा हो तो हिसाब करने में असुविधा नहीं होती है।

धोबी का हिसाब : धोबी से धुलाये जाने वाले वस्त्र का ब्यौरा रखा जाता है। इस खाते में गृहिणी, धोबी को किस तारीख को कपड़े दिए, कितने दिए गए हैं, लिखकर रखती है। इसके अतिरिक्त इस्त्री के कपडों का अलग–हिसाब रखा जाता है और यदि शुष्क धुलाई की गई है तो उसका भी लेखा रखा जाता है ताकि महिने के अंत में कोई कठिनाई नहीं आये। धोबी की हिसाब की कॉपी या डायरी का एक निर्धारित स्थान होना चाहिए ताकि धोबी के आने पर आसानी से मिल जाए।[8]

सम्पत्ति का हिसाब : इस तरह के हिसाब में महान, कार, स्कूटर आदि के खरीद, कर जमा कराने की रसीद, गाड़ी का बीमा आदि का ब्यौरा रखा जाता है। अलग फाईल बनाकर बिल जमा कराने की रसीदें लगाई जाती हैं।

बीमा या अन्य बचत साधन का हिसाब : बीमा या बैंक या पोस्ट ऑफिस या अन्य किसी भी बचत खाते में जब धन विनियोग किया जात है, तब उससे संबंधित सभी कागज, रसीदें एक ही जगह व्यवस्थित की जाती हैं। शेयर, ऋण पत्र, मियादी जमा आदि का विवरण भी इसी खाते में लिखा जाता है।[9]

समाधान एवं सुझाव :

- ❖ नियमित बजट बनाना चाहिए।
- ❖ आय का एक भाग बचत हेतु निर्धारित करना चाहिए।
- ❖ अनावश्यक खर्चो से बचना चाहिए।
- ❖ डिजिटल लेन–देन में सावधानी रखनी चाहिए।
- ❖ बच्चों को वित्तीय शिक्षा देनी चाहिए।

निष्कर्ष : पारिवारिक व्यय एवं घरेलू हिसाब किसी भी परिवार की आर्थिक स्थिरता का आधार है। आय और व्यय के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए घरेलू लेखांकन अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल वर्तमान आर्थिक स्थिति को नियंत्रित करता है, बल्कि भविष्य की सुरक्षा भी सुनिश्चित करता है।

आधुनिक समय में बढ़ती महँगाई और बदलती जीवन–शैली के कारण घरेलू बजट एवं बचत का महत्व और अधिक बढ़ गया है। डिजिटल तकनीकों ने घरेलू हिसाब रखने की प्रक्रिया को सरल बनाया है, किंतु साथ ही वित्तीय अनुशासन की आवश्यकता भी बढ़ाई है।

अतः प्रत्येक परिवार को नियमित घरेलू हिसाब रखना चाहिए तथा आय के अनुसार योजनाबद्ध व्यय एवं बचत करनी चाहिए। यही आर्थिक समृद्धि एवं सामाजिक स्थिरता का आधार है।

संदर्भ सूची :

1. **शर्मा, आर. के. (2018) *गृह प्रबंधन एवं पारिवारिक अर्थशास्त्र,* नई दिल्ली : साहित्य भवन।**
2. **गुप्ता, एस. पी. (2020) *परिवार एवं उपभोक्ता अर्थशास्त्र,* आगरा : प्रकाशन केंद्र।**
3. **सिंह, ए. (2019) *घरेलू वित्तीय प्रबंधन,* जयपुर : रावत पब्लिकेशन।**
4. **डॉ. बेला भार्गव, घरेलू बजट एवं क्रय शक्ति प्रबंध, जैना पब्लिशर्स, जयपुर, संस्करण 2007**
5. **Mishra, P. (2021). "Family BudgetingA nd Saving Behaviour in India", *Indian Journal of Economics*, Vol. 45(3), pp. 112–125.**
6. **National Statistical Office (2022). *Household Consumption Expenditure Survey Report*. Government of India.**
7. **Verma, R. (2020). *Consumer EconomicsA nd Family Finance*. New Delhi:A cademic Publishers.**
8. **Ibid.**
9. **भारत सरकार, आर्थिक सर्वेक्षण, 2023।**

•